VAAGDHARA

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
कृषि एवं जनजातीय विकास मंच
2020–21

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
कृषि एवं जनजातीय विकास मंच
2020–21

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय वस्तु	पेज क्रमांक
1	संदेश – संस्था सचिव वाग्धारा	1
2	संदेश – वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी जनजातीय विकास मंच कुपड़ा	2
3	प्राक्कथन – कृषि एवं जनजातीय विकास मंच कुपड़ा	3
4	पृष्ठभूमि एवं उद्देश्य	4
5	सदस्य परिचय	5
6	समुदाय के साथ गतिविधियां	6
7	मिट्टी पूजन	6
8	देशी बीज संरक्षण	7
9	जनजातीय समागम	8
10	विकास रूप रेखा उदाहरण	11
11	गांव की सूक्ष्म योजना	12
12	हलमा	13
13	जनजातीय स्वराज संगठनों का क्षमतावर्धन	14
14	बाल मित्र गांव	14
15	मंच द्वारा समस्याओं के समाधान पर ज्ञापन	15
16	ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति	18
17	सक्षम समुह	18
18	वातें पत्रिका	19
19	पत्रिका में प्रसारित ख़बरे	20
20	आरती धरती माता की	20

संक्षिप्त रूप

K-JVM	कृषि एवं जनजातीय विकास मंच
JSK	जनजातीय स्वराज केन्द्र
JSS	जनजातीय स्वराज संगठन
B-TDF	ब्लॉक स्तरीय जनजातीय विकास समिति
VDCRC	ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति
SS	सक्षम समुह
BP	बाल पंचायत
GP	ग्राम पंचायत

जयेश जोशी
वागधारा सचिव

संदेश

मुझे हर्ष है कि कृषि एवं जनजातीय विकास मंच द्वारा अपने कार्य की वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन का सृजन किया गया है।

सक्षम समुह के सदस्य अपनी भूमिका की स्पष्ट समझ बनाकर एक सजग स्वयं सेवक की भावना से कार्य करेंगे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन से जागरूक व जनहित निर्णय प्रक्रिया अपनाकर वार्ड सभा, ग्रामसभा के जरीये स्वराज स्थापित करने पर सक्रियता से लागू करने में कामयाब होंगे।

जनजातीय विकास मंच की प्राथमिकताओं को गाँवों के चहुँमुखी विकास की स्थानीय विकास में शामिल करते हुए स्वच्छ, स्वस्थ, स्वावलम्बी, शिक्षित व सशक्त भारत का सपना हर गाँव में हम और आप मिलकर साकार करेंगें, इसी विश्वास और शुभकामनाओं के साथ !

जयेश जोशी

परमेश पाटीदार
वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी
जनजातीय विकास मंच कुपड़ा

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि जनजातीय विकास मंच बांसवाड़ा द्वारा जनजातीय विकास मंच के सशक्तिकरण के उद्देश्य से किये गये कार्यो का प्रतिवेदन तैयार किया गया है। जनजातीय विकास मंच जनजातीय क्षेत्रों में सच्चा स्वराज, सच्ची खेती, सच्चा बचपन के लिए पुरी तरह प्रतिबद्ध है। जनजातीय क्षेत्र के चहुॅमुखी विकास के लिए जनजातीय विकास मंच की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस मंच के माध्यम से सभी स्तरों के समुदायों की सशक्त भागीदारी एवं अपने दायित्वों के प्रति संवेदन शीलता से स्थानीय स्वशासन का सपना साकार हो सकेगा।

आशा है कि जनजातीय विकास मंच द्वारा तैयार की गई प्रगति प्रतिवेदन सभी समुदायों के साथ ही जन प्रतिनिधियों को उनके अपने क्षेत्र में अधिक जागरूक बनाने की दृष्टि से सहायक सिद्ध होगी।

मुझे विश्वास है कि ग्राम स्वराज की संकल्पना आधारित समावेशी विकास का सभी समुदायों ग्रामीण क्षेत्रों में खुशहाली के लिए पुरी निष्ठा से जनजातीय विकास मंच का सहयोग करेंगें।

मै सभी जनजातीय विकास मंच के सदस्यों, स्वंय सेवकों तथा आदिवासी अंचल में निवासरत परिवारों को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

परमेश पाटीदार

मानसिंह निनामा
संयोजक कृषि एवं
जनजातीय विकास मंच कुपड़ा

प्राक्कथन

जनजातीय विकास मंच कुपड़ा वाग्धारा द्वारा जनजातीय समुदायों के परिवारों के लिए निरन्तर एक सुनियोजित क्षमता विकास अभियान का संचालन जनजातीय क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। अब तक जनजातीय विकास मंच वाग्धारा द्वारा 3400 सदस्यों को सदस्यता दिलवाई है।

जनजातीय विकास मंच का अनवरत प्रयास रहा है कि जनजातीय समुदाय को उनके बुनियादी विकास की कार्य योजना बनाने में मदद मिलती रहे एवं परम्परागत संसाधनों को पुनर्जीवित करने के लिये प्रयासरत्त है।

जनजातीय समुदाय में वर्तमान समय में पंचायती राज व्यवस्था अन्तर्गत उपलब्ध शक्तियों दायित्वों एवं अधिकारों का स्वबोध कराने एवं विकास मंच से जुड़े कार्य दायित्व की स्पष्ट समझ बनाने के लिए सहज स्वाध्याय हेतु वर्तमान लघु प्रगति प्रतिवेदन तैयार किया गया है।

मानसिंह निनामा

जनजातीय विकास मंच

पृष्ठभूमि

राजस्थान के दक्षिण क्षेत्रों से जुड़ा आदिवासी क्षेत्र जो 3 राज्यों (राजस्थान, गुजरात एवं मध्यप्रदेश) का आदिवासी क्षेत्र त्रिवेणी संगम के नाम से प्रसिद्ध हैं पिछले कई वर्षो से आदिवासी समुदाय के साथ मिलकर बदलाव व आदिवासी परिवारों के अधिकारों को प्रत्येक परिवार तक पहुँचाने के लिए प्रयासरत वाग्धारा संस्था जो 3 राज्यों के 1 लाख परिवारों के साथ मिलकर कार्य कर रही हैं जो आदिवासी परिवार के अधिकार और उनके जीने के संसाधनों को वापस से पुनर्जीवित करने के लिए संस्था द्वारा जनजातीय क्षेत्र में जल, जंगल, जमीन, जानवर व बीज को बचाने के लिए और समुदाय को बाजारीकरण से वापस अपने आदिवासी रीतिरिवाजों में लाने के लिए जनजातीय विकास मंच का गठन कर परिवर्तन हेतु प्रयासरत हैं।

उद्देश्य

जनजातीय क्षेत्र के आदिवासी परिवारों को अपने अधिकारों के लिए जागरूक करने हेतु जनजातीय विकास मंच का गठन 3 राज्यों के 6 जिलों में 26 जनजातीय स्वराज संगठनों के सदस्यों से मिलकर किया गया है जो जनजातीय समुदायों में टिकाऊ आजीविका, शिक्षा, स्वास्थ्य व अधिकारों के साथ साथ सहभागिता की बात करता है। जनजातीय विकास मंच के द्वारा जनजातीय समुदायों के लिए गॉवों से मुद्दों की पहचान कर उनको ब्लॉक स्तर, जिला एवं राज्य स्तर तक ले जाकर उनके समाधान हेतु समय समय पर नेतृत्व कर समुदाय की समस्याओं के समाधान करने के लिए समुदाय में नेतृत्व क्षमता का विकास कर ग्राम विकास के लिए जिसमें टिकाऊ आजीविका, जल, जंगल, जानवर, मिट्टी, बीज को संजोग कर अपने समुदाय के साथ ही युवा पीढ़ी को इस और अग्रसर कर सच्ची खेती, सच्चा बचपन, सच्चा स्वराज के लिए जिम्मेदारी देने के साथ ही आम आदमी स्वराज की बात कर सम्पूर्ण विकास की प्रकिया में अपनी भागीदारी बढ़ावे !

जनजातीय विकास मंच का सदस्य परिचय

क्र. सं.	नाम	पद
1	जयेश जोशी	मुख्य संरक्षक वाग्धारा संस्था सचिव
2	परमेश पाटीदार	वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, जनजातीय विकास मंच
3	मानसिंह निनामा	संयोजक , जनजातीय विकास मंच
4	अनिता डामोर	कोषाध्यक्ष, जनजातीय विकास मंच
5	गोरी गेदोंत	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
6	मोहनलाल निनामा	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
7	प्रेमशंकर मईड़ा	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
8	छगन लाल निनामा	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
9	सुमन कटारा	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
10	रजनी मईड़ा	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
11	जेमली राठौड़	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
12	फिलीक्स डामोर	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
13	भलजी डामोर	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
14	जयंती लाल डामोर	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
15	दिपक पटेल	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
16	शंकर लाल रोत	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
17	गंगाराम डामोर	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
18	धनराज निनामा	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
19	सीता मईडा	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
20	बक्षुराम	सदस्य, जनजातीय विकास मंच
21	विजय पाल	सदस्य, जनजातीय विकास मंच

जनजातीय विकास मंच की समुदाय के साथ गतिविधियां अप्रैल 2020 से मार्च 2021

मिट्टी पूजन –

जनजातीय विकास मंच के सहयोग से 3 राज्यों के त्रिवेणी संगम में जनजातीय क्षेत्र के 1000 गाँवों में आदिवासी रीतिरिवाज के अनुसार 5 दिसम्बर को मृदा दिवस का आयोजन किया गया जिसमें जनजातीय विकास मंच के द्वारा योजना बनाकर एक दिन पहले जागरूकता रैली के द्वारा प्रचार प्रसार किया गया और 5 दिसम्बर को बड़ी धूमधाम से समुदाय के माध्यम से प्रत्येक गॉव में ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति और सक्षम समुह द्वारा किया गया जिसमें समुदाय के लोग सामुदायिक स्थान पर शामिल होकर अपने अपने खेत की मिट्टी अपने घर का बीज व पानी को सामुदायिक स्थान पर एकत्रित कर आदिवासी रितीरिवाज से मिट्टी पूजा की गई और मिट्टी के महत्व को अपनी आने वाली युवा पीढी समझ सके और उसके लिए कार्यक्रम में युवाओं को शामिल किया गया।

मिट्टी का महत्व –

- ✓ मिट्टी असंख्य सूक्ष्म जीवों का घर है जो नाइट्रोजन को ठीक करते हैं।
- ✓ कार्बनिक पदार्थों और सूक्ष्म जीवों की सेनाओं के साथ-साथ केंचुओं और दीमक को नष्ट करते हैं।
- ✓ मिट्टी पौधों को उनकी जड़ों के लिए तलहटी प्रदान करती है, पौधों को विकसीत करने के लिए आवश्यक पोषक तत्व देती है।
- ✓ यह वर्षाजल को फिल्टर करता है और अतिरिक्त वर्षा जल के स्त्राव को नियंत्रित करता है, जिससे बाढ को रोका जा सकता है।
- ✓ यह कार्बनिक कार्बन की बड़ी मात्रा में भंडारण करने में सक्षम है।
- ✓ यह प्रदूषकों के खिलाफ लड़ता है, इस प्रकार भू-जल की गुणवत्ता की रक्षा करता है।
- ✓ अपने घरो को मिट्टी से बने ईटों के साथ बनाते है, हम कूलड़ व घरों में रसोई बर्तन काम में लेते है वह अनिवार्य रूप से मिट्टी से ही बना होता है।
- ✓ मिट्टी में पौधों के लिए महत्वपूर्ण पोषक तत्व होते है।
- ✓ इसका उपयोग कृषि में पौधों को पोषण देने के लिए किया जाता है, पौधे की जडें मिट्टी से पोषक तत्वों को प्राप्त करने में मदद करती है।
- ✓ मिट्टी का उपयोग आम तौर पर एंटीबायोटिक दवाओं में किया जाता है, मिट्टी में बने सूक्ष्म जीवाणु बैक्टीरिया के लिए हानिकारक होते है।

- ✓ मिट्टी का उपयोग दवा में किया जाता है, बनाई गई दवाओं में त्वचा के मलहम, तपेदिक दवाएं और एंटी ट्यूमर दवाएं शामिल है।
- ✓ धरती पर जीवन के अस्तित्व के लिए मिट्टी बहुत महत्वपूर्ण है।

देशी बीज संरक्षण –

समुदाय आज के युग में अपने देशी बीज को बाजारीकरण के प्रभाव से समुदाय भूलता जा रहा है जिससे आने वाली पीढी देशी बीज की जगह हाइब्रिड को अधिक महत्व दे रहे है जिससे फसल का उत्पादन तो अधिक हो जाता है लेकिन हायब्रिड बीज से मिट्टी व स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। जिससे आज गांवों में भी कई प्रकार की बिमारियां लोगों में देखने को मिल रही है। जिसको ध्यान में रखते हुए वाग्धारा संस्था द्वारा जनजातीय विकास मंच के सहयोग से 3 राज्यों के त्रिवेणी संगम में जनजातीय क्षेत्र के1000 गॉवों में आदिवासी परिवारों को अपने देशी बीज को वापस अपनाने व संरक्षित कर उपयोग में लेने के लिए समय-समय पर गॉव स्तर पर गठित समितियों को बीज संरक्षित कर घर पर रखने की प्रक्रियाओं से रूबरू मासिक बैठकों के माध्यम से करवाया जाता है एवं विकास मंच के द्वारा फसल बुवाई से पहले एक गांव से दुसरे गावों में बताया जाता है कि गांव का बीज गांव में फले का बीज फले में ही काम में ले और जिनके पास खुद का बीज नही है वो अपने पड़ोसी या जान पहचान वालों से लेकर काम में लेवें क्योंकि देशी बीज पर हमारा विश्वास होता है और हमारे द्वारा ही तैयार किया जाता है लेकिन बाजार से जो बीज लाते है उस पर हम पूर्ण रूप से विश्वास नही कर सकते की समय पर अंकुरित होगा (उगेगा) या नही। इसके अलावा जिस गांव में देशी बीज ज्यादा रखते हे वहां से लाकर काम में लेते है इसके साथ ही जनजातीय विकास मंच के द्वारा जनजातीय विकास केन्द्र कुपड़ा में बीज संरक्षण केन्द्र स्थापित किया गया है। जहां से आदिवासी समुदाय के मुख्य बीजों को बुवाई के लिए जनजातीय विकास मंच के सम्पूर्ण कार्य क्षेत्र में पहुंचाया जाता है ओर फसल कटाई के बाद एकत्रित कर वापस से बीज संरक्षण केन्द्र में जमा किया जाता है जिससे जनजातीय समुदाय के किसानों को आर्थिक रूप से मजबूती व समय पर बीज उपलब्ध हो जाता है।

देशी बीज का महत्व –

- ✓ कृषि उत्पादन में बीज का महत्वपूर्ण योगदान है ।एक और जैसा बोओगे वैसा काटोगे यह मर्म किसानों की समझ में आना जरूरी है ।
- ✓ खेती के साथ साथ रोजगार स्वरूप अपनाकर अतिरिक्त आय का साधन बना सकते है ।
- ✓ राज्य के कृषि उत्पादन को बढ़ाने में सहयोग दे सकते है ।
- ✓ मांग की पूर्ति को पूरा करने में आसानी होती है ।
- ✓ अच्छी पैदावार का आधार होता है ।
- ✓ समय व पैसों की बचत होती है ।
- ✓ भविष्य के लिए बीज प्राप्त होता है ।
- ✓ बाजारीकरण की निर्भरता से छुटकारा ।
- ✓ समाज व समुदाय में देशी बीज रखने पर पहचान ।
- ✓ अनावश्यक खर्चो में कटोती ।
- ✓ अनावश्यक बिमारियों से फसलों का बचाव ।

जनजातीय समागम –

जनजातीय विकास मंच एक वर्ष में एक बार सभी जनजातीय स्वराज संगठनों के सदस्यों के साथ मिलकर समागम का आयोजन किया जाता है जिसमें 3 राज्यों से सभी आदिवासी समुदाय के सदस्य भाग लेते है समुदाय द्वारा आदिवासी रीति रिवाज, संस्कृति, पहनावे, आदिवासी परिवार की दिन चर्या में उपयोग होने वाले संसाधन, लोकनृत्य और आदिवासी की पहचान जल, जंगल, जमीन, जानवर व बीज है ।

इसको समुदाय में वापिस प्रचलन में लाने के लिए समुदाय के द्वारा प्रति वर्ष जनजातीय समागम का आयोजन किया जाता है। जिससे जनजातीय विकास मंच समुदाय के पास एक सक्रिय नेटवर्क है जिसकी स्वंय नीतियां है और विकासात्मक प्रक्रियाओं में भाग लेता है जिसके द्वारा समय समय पर स्थानीय, क्षेत्रीय और राज्य स्तर पर अपने मुद्दों को ले जाते है। समागम में मंच के द्वारा अपने अपने विचार अनुभव एक दूसरे के साथ साझा करते है।

यह समागम दो दिन तक लगातार चलता है जिसमें उपस्थित सदस्यों को रहने खाने की पूरी व्यवस्था जनजातीय विकास मंच के द्वारा की जाती है, समागम में उपस्थित महिला पुरूष व युवाओं की वर्तमान समय की चुनौतियों से कैसे पार पाया जा सकता है और साथ ही जनजातीय समुदाय अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर अपना अधिकार ले सके एवं साथ ही सच्चा बचपन, सच्ची खेती, सच्चा स्वराज तभी आयेगा जब सभी लोग आपस में मिलकर वर्षो से चली आ रही परम्पराओं, प्रथाओं जो समाज हित में हो उन्हे अपने जीवन में फिर से अपनाये, युवा वर्ग को आगे आकर समाज को परम्परागत संसाधनों की ओर लौटने एवं उनको सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी लेनी होगी।

इस प्रकार समागम में दो दिनों तक गहन विचार विमर्श विषय विशेषज्ञों (सच्चा बचपन, सच्ची खेती, सच्चा स्वराज)के द्वारा अलग अलग बताया जाता है।

वर्ष 2019 -20 में लगभग 6000 से 7000 हजार से अधिक लोगों ने समागम में भाग लिया था और दो दिन तक सभी ने अपने अपने क्षेत्र के विकास को ध्यान में रखते हुए विकास योजना बनाई गयी।

इसी प्रकार जनजातीय विकास मंच की परम्परा को आगे बढ़ाते जयेश जोशी मुख्य संरक्षक वाग्धारा संस्थान के द्वारा वर्ष 2020-21 में कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुए समागम का रूप विस्तृत न करते हुए स्वराज मित्रों, सक्षम समूह, ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितियों व संगठनों के साथ मनाने का निर्णय लिया और वर्ष 2020-21 में लगातार 6 दिवसीय समागम का आयोजन शुरू किया गया जिसमें अलग अलग क्षेत्रों से लगभग 280 से 300 संगठन सदस्यों ने भाग लिया एवं इन 6 दिनों तक समागम में मंथन कर जनजातीय विकास मंच द्वारा किये गये कार्यो की समीक्षा एवं आगामी वर्ष की कार्य योजना बनाने के लिए अलग अलग विषयों के विशेषज्ञो (सच्चा बचपन, सच्ची खेती, सच्चा स्वराज) के अन्तर्गत जनजातीय क्षेत्र के किसानों के आजीविका से जुड़े मुद्दों के लिए सम्भावित समाधान हेतु जनजातीय विकास मंच द्वारा वार्षिक सम्प्रभुता समागम में की गयी चर्चा में निकले बिंदुओं को संकलित कर माननीय मुख्यमंत्री महोदय को राज्य बजट 2021-22 हेतु सुझावो के रूप में प्रस्तुत किये गए। मुख्य सुझाव के तौर पर आग्रह किया गया कि जनजातीय क्षेत्र के किसानों की बहुआयामी समस्याओं को केन्द्र में रखकर इन क्षेत्रों को अन्य क्षेत्रों से अधिक प्राथमिकता प्रदान की जावे और कृषि की सामान्य योजनाओं के वार्षिक लक्ष्यों से परे, सम्पूर्ण क्षेत्र की विशिष्ट समस्याओं के मद्देनजर दीर्घकालीन कार्यक्रम तैयार किया जावे जिसमें जल, जंगल, जमीन, जानवर तथा बीज का समेकित कार्यक्रम हो। इसके साथ ही अन्य सुझाव भी दिए गए जैसे -

- मक्का, धान की स्थानीय प्रजातियां जैसे (माही कंचल, माही धवल एवं माही सुगंधा) को पुनः स्थापित किया जाये।
- जनजातिय क्षेत्र में गर्मियों में जायद मे मूंग की खेती को बढ़ावा दिया जाए। किसानों को सरकार के द्वारा निःशुल्क बीज का वितरण किया जाए। सरकार के द्वारा प्रशासनिक प्रयास करते हुए जायद में मूंग की फसल के लिये समय पर किसानों को पानी उपलब्ध करवाया जाए।
- जिले में ग्रीष्मकाल में लोगों को मनरेगा के तहत शत-प्रतिशत रोजगार उपलब्ध करवाया जाये एवं जनजातीय क्षेत्र के लिये मनरेगा में कार्य दिवस की संख्या बढ़ाकर 200 दिन किये जाये एवं मनरेगा मजदुरी को बढ़ाया जायें जिससे कि पलायन को रोका जा सकेगा।
- मक्का की मिश्रित खेती को बढ़ावा दिया जाये। जैसे कि मक्का की खेती दलहन के साथ की जावे। मक्का की खेती को बढ़ावा देने हेतु राजस्थान सरकार द्वारा प्रयास किये गये थे कि जिले में मक्का का एक्सीलेन्सी सेन्टर (सुविधा केन्द्र) खोला जावे। ताकि मक्का की खेती के बढ़ावा हेतु किसानों को सहयोग मिले एवं उनकी तकनीकी समस्याओं का समाधान प्राप्त हो सके।

- ❖ बांसवाड़ा के जनजातीय क्षेत्र मे डेयरी तन्त्र को पुनर्जीवित कर उसमे बकरी के दूध को सम्मिलित किया जावे।
- ❖ जिले में आम की उत्पादकता को देखते हुए आम के उद्यानो को बढावा देने के लिये सरकारी स्तर पर प्रयास के माध्यम से वर्ष 2021 – 22 की ग्राम विकास योजना के मुद्दों को ध्यान में रखते हुए विकास की रूपरेखा तैयार की गई।

जिसमें मुख्य रूप से कार्य योजना वर्तमान स्थिति रास्ता जो हमें अपनाना है बदलाव की स्थिति (सपना)

- ✓ संगठन को सपने के बारे में बताना।
- ✓ VDCRC समिति में बताना।
- ✓ सक्षम समूह में बताना।
- ✓ गाँव व फले में सूची तैयार करना व आंकलन करना।

विकास रूप रेखा उदाहरण

प्रथाएं जो समाज के हित में हो उनकी और वापस लौटना होगा, युवा वर्ग को आगे आकर समाज को परम्परागत संसाधनों की ओर लौटने एवं उनको सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी लेनी होगी। इस प्रकार समागम में 6 दिनों तक गहन विचार विमर्श कर गॉव के मुद्दों को ध्यान में रखते हुए विकास की रूपरेखा तैयार की जाती है।

वर्तमान स्थिति →	समस्या →	सपना →	रणनीति
सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पहलू हो सकते है (20 बालिका स्कूल जाती है, लेकिन 80 बालिका स्कूल नहीं जाती है।)	80 बालिकाएं स्कूल नहीं जा रही यह हमारी समस्या है।	100 बालिकाएं स्कूल से जुड़े।	हमें 100 बालिका को स्कूल से जोड़ने के लिए योजना बनाना जिसमे क्या क्या गतिविधि होगी।

समागम आयोजन करने का महत्व

- ✓ आदिवासी संस्कृति रीतिरिवाज, परम्परागत ज्ञान को बनाऐ रखने में मदद।
- ✓ आपसी मेल जोल बनाये रखना ।
- ✓ पुरानी परम्पराओं, प्रथाओं को पुनर्जीवित करने में सहयोग करना।
- ✓ सरकार व समुदाय के बीच आपसी समन्वय बनाये रखना।
- ✓ समुदाय को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए स्वयं की परम्परागत पद्वतियों की और आकर्षित करना ।
- ✓ संगठनों के सहयोग से एक दुसरे की मदद करना।
- ✓ ग्राम विकास में ज्यादा से ज्यादा भूमिका निभाना।
- ✓ समस्या समाधान में विकास मंच, संगठन, समुह व कमेटियों की सफल कहानियों के माध्यम से जागरूक करना।
- ✓ आगामी वार्षिक रणनीति तैयार करना ग्राम स्वराज स्थापित करने के लिए ।

गांव की सूक्ष्म योजना –

जनजातीय विकास मंच के द्वारा 3 राज्यों के 1000 गॉवो के विकास हेतु ग्राम सूक्ष्म योजना गॉव की ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के माध्यम से सम्पूर्ण गांव के संसाधनों को ध्यान में रखाते हुए सामुदायिक स्थान पर ग्राम चौपाल का आयोजन कर ग्राम विकास हेतु सूक्ष्म योजना तैयार की जाती है जिसको गांव की समिति के माध्यम से ग्राम सभा में ज्यादा से ज्यादा लोगों की भागीदारी करवा कर अपने गांव के विकास हेतु समुदाय का सम्पूर्ण योगदान देकर वार्षिक कार्य योजना बनाने में ग्राम पंचायत में भागीदारी कर रहे है जिसमें सामुदायिक कार्य और व्यक्तिगत कार्य के आवेदन अब ग्रामसभाओं में करने लगे है जिससे व्यक्तिगत विकास के साथ साथ सामुदायिक कार्य भी गुणवत्ता पूर्ण होने लगे हैं युवा वर्ग राजनैतिक रूप से मजबूत होने लगा है वह अपने गांव के विकास की योजना बनाते समय भाग लेता है। जनजातीय विकास मंच के कार्यो का प्रभाव दिखने लगा है और कई युवा राजनैतिक क्षेत्र में अपने गांव के विकास हेतु वार्डपंच, सरंपच, पंचायत समिति सदस्य बनकर गांव के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

हलमा –

जनजातीय समुदायों में वर्षो से चली आ रही हलमा परम्परा जिसको अलग अलग क्षेत्रों में अलग अलग नामों से जाना जाता है कही हलमा कहा जाता है तो कही हाड़ा प्रथा के नाम से जाना जाता है ये परम्परा आदिवासी समुदायों में वर्षो से चली आ रही है लेकिन कही न कही आधुनिक युग में बाजारीकरण के प्रभाव ने इस परम्परा को लगभग अपने आगोश में लेकर लुप्त होने के कगार पर लाकर छोड़ दिया है इस परम्परा को सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक,राजनैतिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो समुदाय के विकास का अभिन्न अंग है हलमा से समुदाय में एक संदेश जाता है कि विकट परिस्थितियों में लोग एक दूसरे की किस प्रकार मदद करते थे समाज में एकता, भाईचारा, मेल जोल, बनाये रखने में नींव का पत्थर साबित होती हैं लेकिन युवा पीढ़ी इस परम्परा को बाजरी करण की दौड़ में लगभग भूल चुकी है। इस परम्परा को जनजातीय विकास मंच के सहयोग से जनजातीय समुदाय में 3 राज्यों के 1000 गांवो में 26 जनजातीय स्वराज संगठनो के साथ साथ प्रत्येक गांव में ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति व सक्षम समुह के द्वारा हलमा परम्परा को पुनर्जीवित करने की शुरूआत जनजातीय विकास मंच द्वारा कर दी गई है। जिसमें किसी भी किसान के खेत में बोई हुई फसल की कटाई के समय समुदाय के लोगों के द्वारा हलमा पद्धति से किसान को समुदाय द्वारा सहयोग प्रदान किया जा रहा है जिससे किसान को बाहर से मजदुर लाने की जरूरत नही होती है और किसान की आजीविका में सहयोग प्रदान किया जाता है जिसमें निम्न कार्य किये जा रहे हैं जैसे सामुदायिक स्थान की सफाई व मरम्मत, किसी परिवार के घर का निर्माण फसल बुवाई कुआं निर्माण आदि।

जनजातीय स्वराज संगठनों का क्षमतावर्धन –

जनजातीय विकास मंच के द्वारा 3 राज्यों के 1000 गांवो का प्रतिनिधित्व 26 जनजातीय स्वराज संगठनों द्वारा किया जा रहा हैं ये संगठन प्रत्येक माह बैठक कर सामाजिक, आर्थिक व पर्यावर्णीय समस्याओं के लिए प्राथमिकता के आधार पर ग्राम पंचायत स्तर, ब्लॉक स्तर, जिला स्तर, एवं राज्य स्तर पर नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर कर आये हैं एवं जनजातीय स्वराज संगठनों के द्वारा अपने गांव के सम्पूर्ण स्थाई आजीविका को ध्यान में रखते हुए ग्राम सभा के माध्यम से प्रस्ताव अनुमोदन करवाकर ग्राम स्तर पर अपनी उपस्थिती दर्ज करवा रहे हैं एवं उसके साथ ही प्राकृतिक, भौतिक, आर्थिक संसाधनों की पूर्ण जानकारी रखते हुए राज्य स्तर पर इनके संवर्धन के लिए लगातार राज्य सरकार के साथ मिलकर समुदाय के मुद्दों के समाधान हेतु रणनीति तैयार की जा रही है। जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों को मुद्दों की पहचान करना व सदस्यों को समुदाय के लिए एक अच्छे नेत्तृवकर्ता बन सके इसके लिए संगठन के सदस्यों को हर 3 माह में सदस्यों का क्षमतावर्धन करने के लिए अलग अलग गतिविधियों पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

बालमित्र गाँव –

जनजातीय विकास मंच के माध्यम से कार्य क्षेत्र के सभी गॉवो में बाल पंचायत की स्थापना करने की प्रेरणा हमें बच्चों के साथ होने वाली समस्याओं को समझाने और उनके समाधान की और कार्य करने में आने वाली चुनौतियों से मिली, जिससे बच्चो को होने वाली परेशानियों का स्थायी समाधान हो सके जिसके लिए गांव स्तर पर बाल पंचायत में बच्चों का एक ऐसा मंच तैयार करे जहॉ वह अपनी समस्याओं पर चर्चा कर सके और उस पर समझ बना सके उसके लिए उनकों मिलने वाले अधिकारों पर हम उनकी समझ बना के बाल पंचायत को सक्षम बनाने की और अग्रसर है।

जनजातीय विकास मंच बाल अधिकार को जीवन की महत्वपूर्ण कड़ी समझता है आने वाले समय में ये समुदाय की प्रबल गुणवता को अपने जीवन में प्रमुखता से स्थान दे पाए, जनजातीय समुदाय के खाद्य एवं संसाधनों (जल, जंगल, जमीन, जानवर व बीज) को विकास के रास्ते में भूल ना जाये उस विचार से बच्चों के साथ बाल पंचायत के माध्यम से आपसी संवाद को आगे ले जाया जा रहा है। जिसमें सच्चा स्वराज व सच्ची खेती को समुदाय से जोड़ते हुए बच्चों के साथ संवाद किया जा रहा है।

मंच द्वारा समस्याओं के समाधान पर ज्ञापन –

जनजातीय विकास मंच आदिवासी समुदाय के विकास लिए प्रत्यनशील है मंच द्वारा जनजातीय समुदायों के लिए जो 3 राज्यों के 1000 गांवों में कार्यरत है इन गांवों में विकास के लिए समय समय पर आवाज बुंलद करता रहा, और समुदायों के विकास के लिए गांव स्तर पर समुदाय के साथ बैठके, रैलिया, नारा लेखन, जागरूकता के लिए प्रचार प्रसार के माध्यम से कार्य कर रहा है एवं गांव स्तर पर ग्राम के विकास की सोच रखने वाले युवाओं के साथ मिलकर स्वंय सेवक तैयार किये जा रहे है जो अपने ही गांव में रहकर ग्राम सभा में ग्राम विकास के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रस्ताव अनुमोदन करवाने का काम कर रहे है ये स्वयं सेवक हमेशा विकास की बात करते है और बिना किसी भेदभाव के समाज में व्याप्त बुराईयों को जड़ से मिटाने के लिए एवं जनजातीय समुदाय में रहने वाले अंतिम व्यक्ति तक सरकारी योजनाओं की पहुंच बनाने के लिए कार्यरत है ताकि नियमानुसार पात्र व्यक्ति को लाभ मिल सके इसके साथ ही मंच द्वारा ग्राम स्तर पर ही समस्याओं का समाधान करने की कोशिश करता है और कर भी रहा है बहुत सारी ऐसी समस्याऐ है जिनका समाधान ग्राम स्तर पर ही कर दिया जाता है लेकिन कही सारी ऐसी भी समस्याऐ है जिनका समाधान गांव, ब्लॉक व जिला स्तर पर पहुंचाने पर ही समाधान हो सका है और इसके लिए सभी स्वंयसेवक, गठित समितियॉ, जनप्रतिनिधियों व प्रशासनिक अधिकारियों तक समस्याओं को लेकर समय समय पर अवगत करवाया जाता है और करवाया जा रहा है मंच द्वारा अगर देखा जाए तो पिछले एक वर्ष में मंच के द्वारा जिन समस्याओं का समाधान नही हो पाया है। उन समस्याओं के समाधान के लिए उपखंड़ स्तर पर उपखंड अधिकारी, ब्लॉक विकास अधिकारी, तहसीलदार, जिला स्तर पर जिला अधिकारी व जनप्रतिनिधियों तक समस्या समाधान के लिए सम्पर्क कर ज्ञापन देकर समाधान करने के लिए दबाव बनाया गया और समस्या का समाधान भी हुआ है।

जिसमें हम बात करते है कि अपने 1000 गांव में प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर राजीव गांधी सेवा केन्द्र में ई-मित्र प्लस मशीन कई सालो से नियमित रूप से चालु नही हो पा रही थी, इसके लिए मंच द्वारा उपंखड अधिकारी से लेकर जिला अधिकारी व संबंधित विभाग को ज्ञापन देकर अवगत करवाया गया तो समय पर वर्तमान समय में मशीने कहीं कहीं

पर नियमित रूप से कार्य कर रही और इसी संदर्भ में पिछले वर्ष 2020 में 1000 गांवो के किसानों की खरीफ की फसल अतिवृष्टि के कारण बहुत ज्यादा फसल नुकसान हुआ था चारो ओर किसान परिवारों में निराशा उत्पन्न हुई जिससे किसान परिवारों पर आर्थिक बोझ बढ़ा, इस समस्या का समाधान करने के लिए जनजातीय विकास मंच आगे आया और जगह जगह अपने स्वंय सेवको, समितियों के द्वारा बैठके आयोजित करवा कर अपने ही स्तर पर फसल खराबे का सर्वे करवाया गया और अंतिम निर्णय लिया गया कि इन 1000 गांवो के किसानो की समस्या के बारे में राज्य सरकार तक आवाज पहुंचानी है।

तो विकास मंच के द्वारा लगातार ब्लॉक स्तर से लेकर जिला स्तर पर जिला अधिकारियों को एवं जनप्रतिनिधियों में प्रधान, विधायक, सांसद तक को ज्ञापन दिया गया। सरकार तक सभी किसानों की बात पहुंचाई गई और सरकार के द्वारा सभी किसानों की फसल खराबे की गिरदावरी करवाने के आदेश हुये जिसकी जिम्मेदारी जिला स्तर पर जिला अधिकारी से लेकर तहसीलदार को दी गई, सभी किसानो की फसल खराबे की गिरदावरी कर समय पर सरकार को रिर्पोट पेश की गई। जिससे आने वाले समय में 1000 गांवों के किसानो को ही नही बल्कि कई हजार किसान परिवारों को आर्थिक लाभ होगा। इसके साथ ही कई गांवो में प्राईवेट माईक्रो फाईनेन्स कम्पनियों के द्वारा भोली भाली जनता को सपने दिखाकर सस्ते ऋण के तौर पर आर्थिक मदद देने के नाम पर नगद ऋण दिया गया जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे ही इन कम्पनियों ने अपना काम किया अधिक ब्याज वसूली का गोरखधंधा शुरू कर दिया जिससे आम गरीब परिवार और अधिक ऋण के बोझ तले दबने लगा। इन सब समस्याओं को दुर करने के लिए मंच द्वारा जिला अधिकारी को ज्ञापन देकर अवगत करवाया गया और इन कम्पनियों के खिलाफ जॉच जारी है।

विकास मंच के द्वारा 1000 गांवो में संचालित सरकारी स्कूलों का भवन जर्जर अवस्था में होने के कारण दुर्घटना हुई ओर दो बच्चों की इस दुर्घटना में प्राण गवाने पड़े। ऐसा भविष्य में नही हो और सभी सरकारी स्कूल भवनों को बच्चो के लिए बैठने लायक है या नही इस संबंध में भी ज्ञापन देकर जर्जर भवनो की जांच के सबंध में संबंधित विभाग व जिला अधिकारी को अवगत करवाया जा चुका है एवं जनजातीय सम्प्रभुता समागम 2020 में 'सच्चा बचपन' पर की गयी चर्चा से निकली जनजातीय बच्चों की मांगों का संकलन कर मांग पत्र के रूप में राजस्थान राज्य बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष माननीय संगीता बेनीवाल जी को दिनांक 22 फरवरी 2021 को प्रस्तुत किया गया एवं वाग्धारा द्वारा किये जा रहे विभिन्न प्रयासों के बारे में भी अवगत करवाया गया। इस मांग-पत्र में मुख्य रूप से जनजातीय क्षेत्र को कुपोषण मुक्त बनाने के लिए प्रत्येक विद्यालय में कुपोषण मुक्त अभियान का आयोजन, बच्चों के पोषण स्तर को बढ़ाने के लिए विद्यालय प्रांगण में स्थानीय पौष्टिक फल एवं सब्जियों की पोषण वाटिका का निर्माण, आंगनवाड़ी केन्द्रों की संख्या में वृद्धि एवं सुचारू संचालन, जनजातीय बच्चों तथा किशोरी बालिकाओं की नियमित स्वास्थ्य जांच एवं पूर्ण टीकाकरण, पंचायत स्तर की बाल संरक्षण समिति को पुनर्जीवित करना, प्रत्येक ग्राम पंचायत को बाल संरक्षण के मुद्दे हेतु संवेदनशील बनाना, विद्यालयों में आधारभूत

सुविधाओं - शौचालय, साफ पेयजल सुविधा, चारदिवारी, खेल का मैदान इत्यादि का विकास, बालिकाओं के लिए आवासीय विद्यालयों तथा बालिका छात्रावासों की संख्या में वृद्धि की जाये एवं ग्राम स्तर पर बच्चों की सहभागिता बढ़ाने के लिए बाल पंचायतों का विकास की मांग प्रस्तुत की गयी। माननीय अध्यक्ष महोदया द्वारा बच्चों द्वारा तैयार किये गए मांग पत्र की सराहना की गयी एवं आवश्यक कार्यवाही का आश्वासन दिया गया। वर्तमान समय में जल्द ही इन समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकेगा। इस प्रकार जनजातीय विकास मंच द्वारा जनजातीय समुदायो के हितों को ध्यान में रखते हुऐ लगातार प्रयत्नशील है।

ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति –

जनजातीय विकास मंच द्वारा 3 राज्यों के 1000 गॉवों में 1000 ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति का गठन किया गया जिसमें गॉव से 11 महिलाएं, 12 पुरूष और 2 बच्चों का समिति में चयन किया गया जो सम्पूर्ण गॉव में सामुदायिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के साथ गॉव के प्रत्येक बच्चे को उसके अधिकार के प्रति जागरूक कर रही है। जनजातीय विकास मंच द्वारा ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के साथ मिलकर गांव के सभी वंचित परिवारों का आंकलन कर उसको मिलने वाली योजनाओं से जोड़ा जा रहा हैं जिसके लिए मंच द्वारा गांव से ही स्वंय सेवक का चयन किया गया है जो अपने ही गांव में सामाजिक कार्य में रूचि

रखता हो उसको जनजातीय विकास मंच द्वारा समय समय पर क्षमतावर्धन हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है जो अपने गॉव में हो रही विकास मंच की गतिविधियों को सुचारू रूप से कर सके और गॉव में समुदाय का अपना स्वराज स्थापित हो सके !

सक्षम समुह –

जनजातीय विकास मंच द्वारा 3 राज्यों के 1000 गांवो में 1000 सक्षम समुह का गठन किया गया जिसमें आदिवासी समुदाय में किसान की मुख्य भूमिका महिला की होती हैं जिससे महिला किसानों को आत्मनिर्भर बनाने और अपनी खेती के साथ टिकाऊ आजीविका में सुधार के लिए गॉव के फले से 1 -2 महिला किसानों का चयन कर 20 महिलाओं का एक समुह बनाया गया। जो अपनी परम्परागत खेती को बाजारीकरण के प्रभाव से बचाकर अपना व अपने परिवार के पोषण में सुधार हेतु कार्य किया जा रहा है। जिसमें महिला किसान को टिकाऊ एकीकृत खेती प्रणाली (सिफ्स) की सारी गतिविधियों के बारे में बताएगी और उसके घर पर भी इन गतिविधियों को सुचारू रूप से करेगी।

वातें पत्रिका –

वाग्धारा संस्था जनजातीय विकास मंच के द्वारा बहुत ही आसान व सरल शब्दो में जनजातीय समुदायों के लिए मासिक वातें पत्रिका का विमोचन किया गया जिसमें मंच के द्वारा किये गये कार्यो के साथ ही समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है वातें पत्रिका में समुदाय के संबंध में बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी प्रकाशित की जा रही है जिसका 1000 गांवो के लोगो एवं अन्य गांवो को जो कार्य क्षेत्र में नही है उनको वाते पत्रिका का लाभ मिल रहा है। वातें पत्रिका के माध्यम से हर आम आदमी तक पहुंच बन रही है और वातें पत्रिका जन उपयोगी साबित हो रही है वातें पत्रिका के माध्यम से आम समुदाय को ज्ञानवर्धक जानकारी के साथ ही उनमें अपने अधिकारों को लेकर जागरूकता लाने के साथ साथ ही जल, जंगल, जमीन, जानवर व कृषि सम्बन्धी जानकारी समय पर उपलब्ध करवाई जा रही है और सरकार द्वारा संचालित सभी प्रकार की योजनाओं की जानकारी के साथ विकट परिस्थियों में जैसे कोरोना काल के समय में जनजागरूकता संबंधी लेख प्रकाशित किया गया जिससे आम जन को काफी लाभ मिला है। जनजातीय विकास मंच के द्वारा वाते पत्रिका में सक्षम समुह की सफलता की कहानियां, जल प्रंबधन, परम्परागत स्त्रोत, परम्परागत ज्ञान, शिक्षा, स्वास्थ्य, सच्ची खेती, सच्चा बचपन, सच्चा स्वराज एवं ग्रामीण परिवारों के लिए महानरेगा में काम को लेकर आवेदन करने की प्रकिया, फार्म नं. 6, मनरेगा में मेट की भूमिका, कार्यस्थल पर सुविधायें संरपच व वार्ड पंच की भूमिका के बारे में विस्तार से जानकारी उपलब्ध करवाई जा रही है और भविष्य में भी विकास मंच के द्वारा किये गये कार्यो के साथ ही युवाओं के भविष्य के लिए मार्गदर्शन का मार्ग प्रस्तुत करेगी।

पत्रिका में प्रसारित खबरे

गांवों की समस्याओं के लिए जिला स्तरीय अधिकारियों को ज्ञापन दिया

भास्कर संवाददाता | डूंगरपुर

डूंगरपुर। वाग्धारा संस्थान की ओर से कलेक्टर को ज्ञापन सौंपते हुए।

वाग्धारा संस्थान बांसवाड़ा की ओर से साबला-आसपुर परिक्षेत्र में आमजन की आ रही विभिन्न समस्याओं के लिए गुरुवार को जिला स्तरीय अधिकारियों को ज्ञापन सौंपकर समाधान के प्रयास किए।

कलेक्टर सुरेश कुमार ओला को ज्ञापन देते हुए ई-मित्र प्लस मशीन, अंतिम छोर के किसानों तक पानी पहुंचाना और किसानों के योजनाओं से जुड़ी समस्याओं के बारे में बताया। उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी विभाग में सुनील डामोर से संपर्क कर ई मित्र प्लस मशीनों के ठीक करने की मांग रखी। जिस पर जल्द इंजीनियर भेज कर ठीक कराने का आश्वासन दिया। कृषि उपनिदेशक कार्यालय में तारबंदी योजना, सौर ऊर्जा कनेक्शन योजना, पाइप लाइन पर सब्सिडी योजना एवं कृषि संबंधित योजनाओं की विस्तृत जानकारी ली। सहायक निदेशक परेश पंड्या ने सभी किसानों को इकट्ठा करके विभाग को सूचना देने की बात कही। जिससे वहां पर पहुंचकर योजनाओं की जानकारी दी जाएगी। इस अवसर पर टीम लीडर हेमंत आचार्य, बाबूलाल चौधरी, मुकेश सिंगल, अध्यक्ष गंगाराम डामोर, उपाध्यक्ष नथमल बरगोट, सचिव शंकरलाल रोत, अर्जुनलाल हरमोर, पेमजी बरगोट, जगदीश बरगोट, भूलकी देवी, होमली देवी, भूलकी देवी, भगवानदास रोत, बिरजी, पासीया, कांतिलाल, शंकरलाल, लक्ष्मी मकवाना, मोतीलाल बिलुड़ा सहित सदस्य मौजूद थे।

फसल खराबे पर मुआवजे की मांग

गांगड़तलाई. वाग्धरा संस्थान के तहत जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों ने तहसील कार्यालय में तहसीलदार को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन देकर बारिश के दौरान किसानों की खराब हुई फसल पर मुआवजा मांगा है। ज्ञापन में बताया है कि पिछले दिनों जोरदार बारिश से किसानों की फसल पूरी तरह से नष्ट हो गई है। इसके पहले लॉकडाउन के कारण किसान परेशान हो गए थे। वहीं बारिश से भी काफी बड़ा नुकसान हुआ है। इस कारण किसानों को मुआवजा दिया जाए। इस अवसर पर हिम्मतलाल, तेरसिंह, नाथू भाई, उदयसिंह, सविता बेन, जसी बाई, प्रभूदास, अशोक आदि मौजूद रहे।

ई-मित्र प्लस मशीन शुरू कराने की मांग

डूंगरपुर. ज्ञापन देने पहुंचे संगठन के प्रतिनिधि

डूंगरपुर @ पत्रिका. वाग्धारा संस्थान बांसवाड़ा द्वारा गठित जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों ने विभिन्न समस्याओं के निस्तारण को लेकर कलक्टर को गुरुवार को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में सदस्यों ने बताया कि ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत में ई-मित्र प्लस की मशीनें लगाई गईं। पर, नियमित रूप से ऑपरेट नहीं होने के कारण लाभ नहीं मिल पा रहा है। ऐसे में उन्हें पुनः शुरू करवाने की मांग की। साथ ही माही बजाज सागर का पानी टेल तक पहुंचाने, खरीफ-फसल मुआवजा 2020 की मुआवजा राशि जल्द दिलवाने आदि की मांग रखी। इस पर कलक्टर ने उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया। इस दौरान बाबूलाल चौधरी, मुकेश सिंगल, मोतीलाल बिलुड़ा, लक्ष्मी मकवाना, संगठन अध्यक्ष गंगाराम, सचिव नथमल, उपाध्यक्ष शंकरलाल आदि मौजूद रहे।

स्वराज संगठन की बैठक

साबला @ पत्रिका. वाग्धारा संस्थान द्वारा गठित जनजातीय स्वराज संगठन आसपुर की मासिक बैठक शुक्रवार को आदिवासी सामुदायिक भवन आमली का आरा सोमपुल-लैंबाता पर हुई। अध्यक्षता गंगाराम डामोर ने की। बैठक में सूरत हादसे में दिवंगत कुशलगढ़ के मजदूरों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। डामोर ने कहा कि प्रत्येक ग्राम पंचायत पर ई-मित्र प्लस की मशीन लगी हुई है। उन्हें शुरू कराने के लिए जिला कलक्टर को ज्ञापन देने का निर्णय किया है। साथ ही फसल खराबा को लेकर साबला उपखंड अधिकारी को ज्ञापन दिया गया था। इसके बावजूद कोई समाधान नहीं हो पाया है। ऐसे में अब जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया जाएगा। संगठन सचिव शंकरलाल रोत, कार्यक्रम अधिकारी बाबूलाल चौधरी, मोतीलाल भीलुड़ा, लक्ष्मी मकवाना, नथमल मीणा, भगवानदास, कांतिलाल, धुलिया, कमला देवी, गणेशलाल, काली देवी, मोहनलाल खाटेला, होमली देवी आदि मौजूद रहे।

प्राप्त होता है। आचार्य जी ने कहा कि संसारी प्राणी अपने आकांक्षा के कारण से दुखी रहता है। जब हम ... में लीन है। उन जागृत पुरुषों को देखो। इस संकल्प को अपने भीतर

कार्यशाला में ग्रामीणों को योजनाओं की जानकारी दी

प्रशिक्षण कार्यक्रम में बैठे ग्रामीण व संस्था के कार्मिक।

भास्कर संवाददाता | साबला

साबला ब्लॉक के लैंबाता सोमपुल पर ग्राम पंचायत के सामुदायिक भवन में जनजाति स्वराज संगठन आसपुर के सदस्यों की एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम वाग्धारा संस्थान की ओर से हुआ। प्रशिक्षण में सदस्यों को बताया गया कि पंचायती राज की संरचना, जनसूचना पोर्टल जिसमें अपनी ग्राम पंचायत के कार्यों के बारे में जानकारी एवं सरकार द्वारा सभी प्रकार की सरकारी योजनाओं के बारे में जन सूचना पोर्टल के माध्यम से जानकारी दी। प्रशिक्षण में सीनियर परियोजना अधिकारी परमेश पाटीदार, बाबूलाल चौधरी, मोतीलाल बिलुड़ा व लक्ष्मी मकवाना एवं संगठन अध्यक्ष गंगाराम डामोर, पूंजीदेवी, कान्तीलाल बरगोट, भगवानदास रोत, भूलकी देवी, नथमलजी, रूपी देवी, धनिया डामोर, धुलेश्वर, महिपाल आदि उपस्थित रहे। संगठन सदस्यों का आभार मोतीलाल बिलुड़ा ने व्यक्त किया।

पंचायतों में ई मित्र प्लस मशीनें बंद होने से ग्रामीणों को हो रही परेशानी

11 पंचायतों के 35 गांवों को मिलाकर जनजातीय स्वराज संगठन बनाया

ई मित्र मशीनों को शुरू करवाने को लेकर ज्ञापन देते ग्रामीण।

...सिवाड़ा. वाग्धरा संस्थान की ओर से गठित जनजातीय स्वराज संगठन घाटोल की मासिक बैठक प्रेमशंकर के दिशा निर्देश में हुई। इसमें सर्वसम्मति से निर्णय लेकर 11 ग्राम पंचायतों के 35 गांवों को मिलाकर एक जनजातीय स्वराज संगठन का गठन किया गया। जिसका उद्देश्य ... उत्थान के लिए समय समय पर जनता की आवाज बनकर ग्रामीण विकास के लिए संगठन ... आवाज उठाई गई। संगठन सदस्य नानालाल ने बताया कि 2 साल से ग्राम पंचायतों में ई मित्र मशीनें लगी हुई हैं, वे सब बंद हैं और धूल खा रही है। जिस कारण जनजातीय लोग परेशान ... आए दिन ग्रामीण पंचायत मुख्यालय जा रहे लेकिन नेट नहीं चलने के कारण समस्या समाधान नहीं हो रहा है। मशीनें बंद क्यों पूछने पर संतोषप्रद जवाब नहीं देते हैं। कई सरपंच और सचिव से बातचीत की लेकिन ... समाधान नहीं हुआ तो गुरुवार को फिर से विकास अधिकारी घाटोल को ज्ञापन दिया। ग्रामीण क्षेत्र में एकल महिला विधवा, विकलांग लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है, ज्ञापन देने के दौरान वाग्धरा संस्थान से सीनियर परियोजना अधिकारी परमेश पाटीदार, टीम लीडर हेमंत आचार्य, परियोजना अधिकारी सच्चा स्वराज बाबूलाल चौधरी वह नेहा कुमारी व संगठन के सदस्य प्रभु लाल डामोर, मोहनलाल संगठन उपाध्यक्ष, सचिव रणजीत, जीव, खातू राम चरपोटा, सहज कता नेरा भुनकर व सोना तावियार उपस्थित रहे।

जनजातीय स्वराज संगठन के कार्यकर्ता जुटा रहे फसल खराबे की जानकारी

बांसवाड़ा. वाग्धारा संस्था द्वारा किए जा रहे अलग-अलग मुद्दों पर कार्य में सच्ची खेती, सच्चा बचपन और सच्चा स्वराज को लेकर जनजातीय क्षेत्र के लोगों के अपने अधिकारों को लेकर कार्य कर रहे हैं, जिसमें अपने अधिकारों को लेकर जनजातीय स्वराज संगठनों ने अपने स्तर पर ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के माध्यम से बैठक कर अपने क्षेत्र में हुए फसल खराबे का जायजा लेकर किसानों की जानकारी एकत्रित की जा रही है। वर्तमान में कोविड-19 के कारण वागड़ के किसान पहले से ही परेशानियों का सामना कर रहे हैं। अतिवृष्टी के कारण कुशलगढ़ और सज्जनगढ़ क्षेत्र में फसल खराब हो चुकी है। जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों द्वारा क्षेत्र के सभी किसानों की कर रहे पूर्ण तैयारी जिसमें कुशलगढ़ ब्लॉक के जनजातीय स्वराज संगठन टिमेड़ा बड़ा, भगतपुरा, पाटोलिया, छोटी सरवा और सज्जनगढ़ ब्लॉक के कलारबाड़ी, भीलकुआ एवं ... आदि में जनजातीय संगठनों के सदस्य जिसमें परेश, अमृती, रजनी, ... अनीता डामोर, दिनेश डिंडोर, ... डामोर, मानसिंह आदि सदस्यों के द्वारा जानकारी एकत्र कर प्रशासन तक पहुंचाई जाएगी एवं फसल खराबे की राशी की मांग की जाएगी।

गिरदावारी की मांग, फसल खराबे का मुआवजा मांगा

जनजातीय विकास मंच के नेतृत्व में किसानों ने कलेक्टर से लगाई मदद की गुहार

मुआवजे की मांग को लेकर कलेक्टर को ज्ञापन देने पहुंचे किसान।

बैठक में हांडा प्रथा पर चर्चा

आसपुर. लेम्बाता के खेत में हांडा प्रथा शुरू करते वागधरा के सदस्य।

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

patrika.com

आसपुर. वागधरा संस्था की बैठक शनिवार को सोमपुल सामुदायिक भवन लेम्बाता में हुई।

परियोजना अधिकारी बाबूलाल चौधरी एवं आसपुर ब्लॉक प्रभारी मोतीलाल बीलुड़ा के आतिथ्य में हुई बैठक में संस्था के कार्यों की समीक्षा कर नई कार्ययोजना का खाका तय किया। इसी क्रम में वागड़ क्षेत्र में लुप्त हो रही कृषि कार्यों में एक दूसरे काश्तकारों के खेतों में मदद करने की हांडा (हलमा) प्रथा को पुनर्जीवित करने की कार्य योजना तय की। साथ ही बैठक के तुरंत बाद उपस्थित सदस्यों ने लेम्बाता गांव में प्रेमशंकर बरगोट के खेत में खरपतवार हटाकर हांडा प्रथा का शुभारंभ भी किया। संस्था के सभी सदस्य ब्लॉक की 13 ग्राम पंचायतों के 30 गांवों में इस अभियान को लेकर प्रभावी जन जागरण का निर्णय लिया। क्षेत्र के गांवों में मौजूदा खरीफ की फसल खराबे पर काश्तकारों को मुआवजा दिलाने सरकार तक उनकी आवाज पहुंचाने विचार विमर्श किया। बैठक में संगठन सचिव शंकरलाल रोत, लक्ष्मी मकवाना, भगवानदास रोत, अर्जुनलाल हरमोर, धुलेश्वर बरगोट, पेमजी, कांतिलाल बरगोट, भूलकी देवी आदि शामिल हुए।

अतिवृष्टि से खराब हुई फसल खराबे के मुआवजे की मांग

मुआवजे की मांग को लेकर गांगड़तलाई तहसीलदार को ज्ञापन देने पहुंचे ग्रामीण।

भास्कर संवाददाता | बांसवाड़ा

वाग्धरा संस्थान के माध्यम से जनजातीय स्वराज सहयोग संगठनों के सहयोग इकाई की ओर से गांगड़तलाई ब्लॉक में खरीफ की फसल को अतिवृष्टि के कारण नुकसान हुआ है। इस नुकसान की भरपाई के लिए मुआवजे की मांग को लेकर ग्रामीणों ने तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया कि कोरोना के कारण पहले ही लोगों का रोजगार खत्म हो गया है। काम धंधा चौपट हो गया है। खेती कर जैसे तैसे कर लोग अपना गुजारा कराना चाहते हैं तो इस साल अतिवृष्टि से सारी फसलें खराब हो गईं। ऐसे में परिवार का भरण पोषण करना मुश्किल हो गया है। वाग्धरा के जनजातीय स्वराज संगठन के माध्यम से किसानों के बैनर तले तहसील कार्यालय पहुंचे और जल्द से जल्द मुआवजा देने की मांग की। इस दौरान वाग्धरा के कार्यक्रम प्रबंधक रोहित स्मिथ, हिम्मतलाल, तेरसिंह, नाथू, उदयसिंह, सविता, प्रभुदास, विनोद, दिनेश पटेल आदि उपस्थित रहे।

...गिरदावर जमान नहीं दे रहे हैं।

फसल खराबे पर मुआवजे की मांग

खमेरा/चिड़ियावासा. वाग्धरा संस्थान के तहत जन जातीय स्वराज संगठन सदस्यों के द्वारा खरीफफसल में अतिवृष्टि के कारण नुकसान का मुआवजा दिलवाने के लिए एसडीएम को ज्ञापन दिया। जिसमें बताया है कि अतिवृष्टि के कारण किसानों को काफी नुकसान हुआ है। इस अवसर पर संगठन के मोहनलाल, छगनलाल, लालू, प्रेमशंकर, रमेश, गणेश, नरेश, सोना, बाबूलाल चौधरी, अंकित जोशी आदि मौजूद रहे। यह जानकारी इकाई प्रबंधक हेमंत आचार्य द्वारा दी गई।

हलमा पद्धति की शुरूआत

चिड़ियावासा. वाग्धरा संस्थान के सहयोग से आदिवासी समुदाय में जनजातीय स्वराज संगठन खागोली के सदस्यों ने हलमा पद्धति की शुरूआत की। गाव बुढ़ा में 35 गांवों के सदस्यों ने मिलकर सफाई की। इस अवसर पर अध्यक्ष मणिलाल डामोर, कोषाध्यक्ष मोहनलाल निनामा ने बताया कि महीने में एक बार समुदाय के किसी जरूरतमंद व्यक्ति की मदद की जाएगी।

आरती धरती माता की

जय धरती माता,..... मैया जय धरती माता .....मैया जय धरती माता .....

सबका पालन करती, सबका पालन करती, तू ही दुःख हर्ता मैया तू ही दुःख हर्ता।

फूल, फल, अन्नदेती..... फूल, फल, अन्न देती। है सबकी माता मैया है सबकी माता।

घास रुखड़ा पाले, घास रुखड़ा पाले, ... पलता जग सारा मैया पलता जग सारा।

खुद वो प्यासी रहती, खुद वो प्यासी रहती, सबको दे पानी मैया सबको दे पानी।

नदिया नाले बहते, नदिया नाले बहते, पलता जीवसारा, मैया पलता जीवसारा।

ताल–तलैया बांधों..... ताल–तलैया बांधों .....कुआ भरजावे..... मैया कुआ भर जावे।

कंम्पोस्ट खाद बनाओ, कंम्पोस्ट खाद बनाओ, उपजे अन्न ज्यादा, मैया उपजे अन्न ज्यादा।

यूरिया डीएपी हटाओ, यूरिया डीएपी हटाओ, जलती है माता..... मैया जलती है माता।

पेड़–पोधे लगाओ, पेड़–पोधे लगाओ, घास बने सारी,... मैया घास बने सारी।

दलहन को उपजाओ, दलहन को उपजाओ, पोषण दे..... ज्यादा मैया पोषण दे..... ज्यादा।

धरती माता की सेवा, धरती माता की सेवा, जो कोई जन करता, ... मैया जो कोई जन करता

उसके खेत सुधर जावे, उसके कुआ भरजावे, उसके घर लक्ष्मी आवे, मैया घर लक्ष्मी आवे,

कहत शिवानन्द स्वामी, कहत शिवानन्द स्वामी, उसका जीवन सुधर जावे।

मैया जीवन सुधर जावे.....

बोल धरती मात् की...

जनजातीय विकास मंच

Head Office : Village & Post Kupra,District Banswara, Rajasthan (India)
Ph. : +91-9414082643, Fax : +91-9024573411 E-mail : jjoshi@vaagdhara.org
State Co-ordination Office : Plot No. A-38, Bhan Nagar, Queens Road,
Vaishali Nagar, Jaipur (Rajasthan) - 302021; Ph: +91-141-2351582 Website : www.vaagdhara.org

VAAGDHARA